।। श्रीहरिः ।।

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय प्रमाण

उत्सव तथा व्रतन की टीप

विक्रम संवत् २०७७ प्रमादी नाम संवत्सरे ई. स. 2020-2021

श्री वल्लभाब्द ५४२ - ५४३ शालिवाहन शके १९४२ शार्वरी नाम संवत्सरे

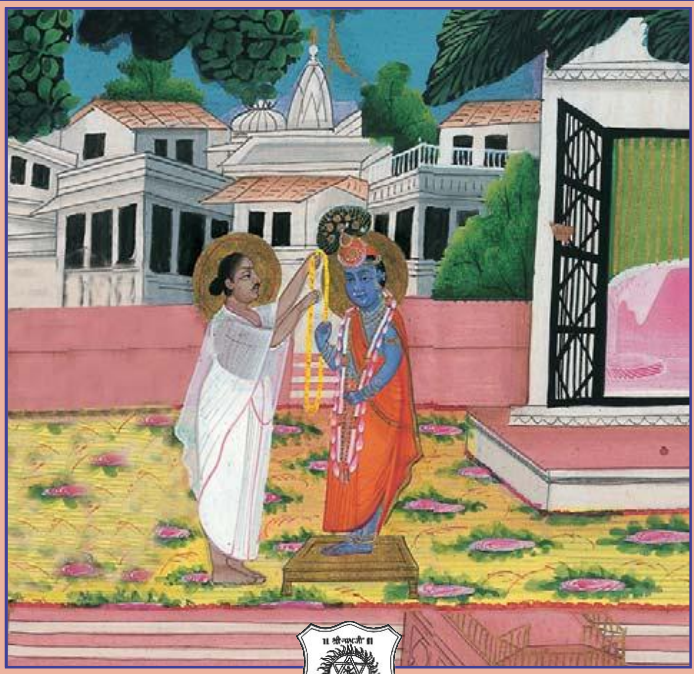

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रधानपीठस्थित
आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित
श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज की आज्ञासूं प्रकाशित

प्रकाशक : विद्याविभागाध्यक्ष, मन्दिर मण्डल, श्री नाथद्वारा

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

नाथद्वारा

जन्मतिथि - फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् - २००६

जन्म तारीख - २४ फरवरी
सन - १९५०

सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।

श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।
सर्वदा ध्यात्म तल्लीनं, श्रीमन्तं प्रियदर्शनम्।
इन्द्रदमनमाचार्यं, पीठाध्यक्षं नमाम्यहम्।।
आर्त्रत्राण प्रतिज्ञाय शुद्धाद्वैतावलम्बिने।
श्रीनाथ पीठाधिष्ठात्रे राकेशाय वयं नुमः।।

प्रति १,००,००० {न्योछावर १०/- रुपया}

निवेदन

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभु जी के उपदेश पृष्ठ ३३ से लेकर ३४ पर प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मँगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

वल्लभाब्द ५४२	**चैत्र शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	25	इष्टिः। मार्च, सन् 2020 संवत्सरोत्सवः।
२	गुरु	26	
३	शुक्र	27	गणगौरी। (चूंदड़ी गणगौर)
४	शनि	28	पंचरंगी लहरियाँ (हरिगणगौर)
५	रवि	29	गुलाबी गणगौर
६	सोम	30	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५) केसरी गणगौर एवं यमुना छट्ठ।
७	मंगल	31	
८	बुध	1	अप्रेल
९	गुरु	२	रामनवमी व्रतम्।
१०	शुक्र	3	रामनवमी व्रत की पारणा।
११	शनि	4	कामदा एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	रवि	5	
१३	सोम	6	
१४	मंगल	7	
१५	बुध	8	इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४२	**वैशाख (गु. चैत्र) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२	गुरु	9	
३	शुक्र	10	
४	शनि	11	
५	रवि	12	
६	सोम	13	मेष संक्रान्ति सतुआ शयन में पुण्यकाल मध्याह्न से सूर्यास्त ६ बजके ५५ मिनिट पर्यन्त। तामे भी संक्रान्ति के पास के २ घंटा तक अति मुख्य पुण्यकाल है। अब के यह संक्रान्ति ६ सोम कूं रात्रि के ८ बजके २४ मिनिट पर बैठे है। तासूं पुण्यकाल आज मान्यो जायेगो। श्री कूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने। ६/२४ पश्चात् शयन भोग में।
७	मंगल	14	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सव।
८	बुध	15	
९	गुरु	16	
१०	शुक्र	17	पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	शनि	18	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्यजी (श्री महाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५४३ को प्रारम्भः।
१२	रवि	19	
१३	सोम	20	
१४	मंगल	21	
३०	बुध	22	
३०	गुरु	23	इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३			**वैशाख शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	24	
२	शनि	25	
३	रवि	26	अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भदानम्।
४	सोम	27	
५	मंगल	28	
६	बुध	29	
७	गुरु	30	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६६०)
८	शुक्र	1	मई
६	शनि	2	
१०	रवि	3	
११	सोम	4	मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
१३	मंगल	5	
१४	बुध	6	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्।
१५	गुरु	7	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	8	इष्टिः।
२	शनि	9	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
३	रवि	10	कली के शृंगार को आरम्भ।
४	सोम	11	
५	मंगल	12	
६	बुध	13	
७	गुरु	14	
८	शुक्र	15	
९	शनि	16	
१०	रवि	17	
११	सोम	18	अपरा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	19	
१३	बुध	20	
१४	गुरु	21	
३०	शुक्र	22	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	ज्येष्ठ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	23	इष्टिः।
२	रवि	24	
३	सोम	25	आज सूं ले के आषाढ़ कृष्ण २ रवि तक सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है तासूं इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
४	मंगल	26	
५	बुध	27	श्री के नाव को मनोरथ।
६	गुरु	28	
७	शुक्र	29	
८	शनि	30	
९	रवि	31	
१०	सोम	1	जून, श्री गंगादशमी दशहरा, श्री यमुनाजी को उत्सव माने है।
११	मंगल	2	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	3	
१३	गुरु	4	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१९००)
१५	शुक्र	5	स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	6	इष्टिः। ज्येष्ठाभिषेक स्नानयात्रा।
२	रवि	7	
३	सोम	8	
४	मंगल	9	
५	बुध	10	
६	गुरु	11	
७	शुक्र	12	
८	शनि	13	
९	रवि	14	
१०	सोम	15	
११	मंगल	16	
११	बुध	17	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	18	
१३	शुक्र	19	
१४	शनि	20	जुलाई।
३०	रवि	21	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)। खण्डग्रास सूर्यग्रहण नाथद्वारा में दृश्य। ताको निर्णय पृ. २८-२९ पर अंकित है। इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

आषाढ़ शुक्लपक्षः

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	22	
२	मंगल	23	
३	बुध	24	रथयात्रा।
४	गुरु	25	
५	शुक्र	26	श्री द्वारकाधीश जी को पाटोत्सवः। कसूंभा छठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी बिराजे सो उत्सव तथा तिलकायित **श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी)** महाराज गादी बिराजे (२०५७)। षष्ठी को क्षय होयवे सूं आज।
७	शनि	27	
८	रवि	28	
९	सोम	29	
१०	मंगल	30	बैंगन दशमी।
११	बुध	1	जुलाई, देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य नियमारम्भः। कली के शृंगार पूर्ण।
१२	गुरु	2	
१३	शुक्र	3	
१४	शनि	4	
१५	रवि	5	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्य नियमारम्भः। एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४३	**श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	6	
२	मंगल	7	हिन्दोलारम्भः १ सोम कूं वैधृति योग होयवे सूं आज।
३	बुध	8	
४	गुरु	9	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः।
५	शुक्र	10	
६	शनि	11	
७	रवि	12	
८	सोम	13	जन्माष्टमी की बधाई।
९	मंगल	14	
१०	बुध	15	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज को उत्सव। हाण्डी उत्सव (१७६३)।
११	गुरु	16	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	17	
१३	शनि	18	
१४	रवि	19	
३०	सोम	20	सोमवती अमावस, हरियाली अमावस।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३			**श्रावण शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	21	इष्टिः।
२	बुध	22	
३	गुरु	23	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	शुक्र	24	
५	शनि	25	नाग पंचमी।
६	रवि	26	
७	सोम	27	
९	मंगल	28	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०	बुध	29	
११	गुरु	30	पुत्रदा एकादशी व्रतम्। पवित्रारोपणं प्रातः शृंगार में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरावे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत।
१२	शुक्र	31	गुरुओं को पवित्रा धराना।
१३	शनि	1	अगस्त।
१४	रवि	2	श्री विट्ठलेशराय जी महाराज को उत्सव (१६५७)।
१५	सोम	3	रक्षाबन्धनं सायं उत्थापन में, गुसांई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२), ऋग्वेदीन की श्रावणी, आपस्तम्भ, हिरण्य केशीय, बोधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीन की श्रावणी।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**भाद्रपद (गु. श्रावण) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	4	इष्टिः। गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज को उत्सव (१९१७) (हेम हिन्दोला)।
२	बुध	5	
३	गुरु	6	हिन्दोला विजय शृंगार में, कज्जली तीज।
४	शुक्र	7	
५	शनि	8	
६	रवि	9	
६	सोम	10	
७	मंगल	11	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव।
८	बुध	12	जन्माष्टमी व्रतम्।
९	गुरु	13	नन्द महोत्सव।
१०	शुक्र	14	
११	शनि	15	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	16	
१३	सोम	17	
१४	मंगल	18	काका वल्लभजी को उत्सव (१७०३)।
३०	बुध	19	कुशग्रहणी अमावस, राधाष्टमी की बधाई। इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	भाद्रपद शुक्लपक्ष	विक्रमाब्द २०७७

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	गुरु	20	
३	शुक्र	21	
४	शनि	22	गणेश चतुर्थी, सामवेदीन की श्रावणी।
५	रवि	23	ऋषि पंचमी। द्वितीय स्वरूपोत्सव।
६	सोम	24	ति. श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव (१७४४)।
७	मंगल	25	
८	बुध	26	राधाष्टमी।
९	गुरु	27	
१०	शुक्र	28	
११	शनि	29	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी) नवलक्ष ग्रंथकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव (१७१४), वामन द्वादशी।
१२	रवि	30	
१३	सोम	31	
१४	मंगल	1	सितम्बर
१५	बुध	2	सांझी को आरम्भ। श्राद्धपक्ष को आरम्भ ताको निर्णय पृष्ठ ३० पर एवं श्राद्धपक्ष को संकल्प पृष्ठ ३१ पर लिख्यो है।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**आश्विन (गु.भाद्रपद) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	3	इष्टिः।
२	शुक्र	4	
३	शनि	5	
४	रवि	6	
५	सोम	7	श्री हरिरायजी को उत्सव (१६४७)
६	मंगल	8	
७	बुध	9	
८	गुरु	10	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव (१५८७)।
९	शुक्र	11	
१०	शनि	12	
११	रवि	13	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	सोम	14	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव (१५६७)
१३	मंगल	15	श्री गुसांईजी के तीसरे लाल जी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (१६०६)
१४	बुध	16	
३०	गुरु	17	सर्वपितृ अमावस, कोट की आरती और सांझी की समाप्ति।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	अधिक आश्विन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	18	इष्टिः। पुरुषोत्तम मास को आरम्भ। कांस्य के पात्र में ३३ पूआ अथवा पक्वान्न भोग धरके वा को प्रतिदिवस दान या मास में प्रशस्त है। नित्य न बने तो हूं प्रथम दिवस तथा आगे द्वादशी में लिखे ५ पर्वन में अवश्य करनो दान को संकल्प एवं श्लोक पृष्ठ ३२ पर लिखे है। पुरुषोत्तम मास सम्बन्धी भोग स्नान दानादि नियमन को आरम्भ या मास में नित्य सेवा को विशेष नियम तथा भगवान्नाम जाप गीता भागवतादिकन के पाठ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन गोपूजनादि जो बन सके तो कछूं भी सत्कृत्य नित्य अवश्य करनो।
२	शनि	19	
४	रवि	20	
५	सोम	21	या दिन प्रातः ८ बजे तक वैधृति हे तासूं ये भी अति पुण्य समय हे। तासूं कछू भी श्री के मनोरथ दानादि अधिक यथाशक्ति करने।
६	मंगल	22	
७	बुध	23	
८	गुरु	24	
९	शुक्र	25	
१०	शनि	26	
११	रवि	27	कमला एकादशी व्रतम्। दोनों एकादशी में पात्रदान दूध घर की अथवा फलाहार की वस्तु सूं करनो। दान नित्य न बन सके तो दोऊं द्वादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, व्यतीपात इन पाँच पर्वन में अवश्य ही करनो। इन पर्वन मे गो पूजन को बड़ो ही फल है।
१२	सोम	28	
१३	मंगल	29	
१४	बुध	30	
१५	गुरु	1	अक्टूबर, पुण्य दिनम्।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**अधिक आश्विन कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	2	इष्टिः।
२	शनि	3	
२	रवि	4	
३	सोम	5	
४	मंगल	6	
५	बुध	7	या दिन व्यतीपात योग होयवे सूं दानादि कार्य में विशेष प्रशस्त है।
६	गुरु	8	
७	शुक्र	9	
८	शनि	10	
९	रवि	11	
१०	सोम	12	
११	मंगल	13	कमला एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	14	
१३	गुरु	15	
३०	शुक्र	16	अधिक मास के नियम की समाप्ति। पुण्य दिनम्।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**निज आश्विन शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	17	इष्टिः। नवरात्रारम्भः, मातामह श्राद्ध।
२	रवि	18	
३	सोम	19	
४	मंगल	20	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१९५४)।
५	बुध	21	सरस्वती पूजनारम्भः।
६	गुरु	22	
७	शुक्र	23	
८	शनि	24	सरस्वती विसर्जनम्।
९	रवि	25	दशहरा (विजयादशमी)।
१०	सोम	26	श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११	मंगल	27	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	28	
१३	गुरु	29	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।
१४	शुक्र	30	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)।
१५	शनि	31	कार्तिक स्नानारम्भः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	1	नवम्बर, इष्टिः।
२	सोम	2	
३	मंगल	3	
४	बुध	4	
५	गुरु	5	
६	शुक्र	6	
६	शनि	7	
७	रवि	8	
८	सोम	9	
१०	मंगल	10	
११	बुध	11	रमा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	12	
१३	शुक्र	13	धनतेरस।
१४	शनि	14	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग), दीपावली (दीपोत्सव) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई।
३०	रवि	15	अन्नकूटोत्सव। गोवर्द्धन पूजा। गुर्जराणां २०७७ वर्षारम्भः। इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	कार्तिक शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	16	यम द्वितीया (भाईदूज)।
३	मंगल	17	
४	बुध	18	
५	गुरु	19	
६	शुक्र	20	
७	शनि	21	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३)।
८	रवि	22	गोपाष्टमी।
९	सोम	23	अक्षय नवमी। कृत युगादि कूष्माण्ड दानम्।
१०	मंगल	24	
११	बुध	25	
१२	गुरु	26	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं प्रातः शृंगार में। श्री गुसांई जी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलाल जी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)।
१२	शुक्र	27	
१३	शनि	28	
१४	रवि	29	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)।
१५	सोम	30	चार स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्तिः। गोपमासारम्भः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	1	दिसम्बर, व्रतचर्या अथवा गोपमासारम्भः। इष्टिः।
२	बुध	2	
३	गुरु	3	
४	शुक्र	4	छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायित श्री दाऊजी महाराज कृत।
५	शनि	5	
६	रवि	6	
७	सोम	7	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव (१६८४)
८	मंगल	8	श्री गुसांई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव (१५६६)।
९	बुध	9	
१०	गुरु	10	घटा को आरम्भ (हरिघटा)।
११	शुक्र	11	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्। श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निजमंदिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)। द्वादशी का क्षय होयवे सूं आज।
१३	शनि	12	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)
१४	रवि	13	
३०	सोम	14	सोमवती अमावस, श्यामघटा।

श्रीनाथजी मंदिर

वल्लभाब्द ५४३	**मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	15	इष्टिः। धनुर्मासारम्भः।
२	बुध	16	दूज को चन्दा।
३	गुरु	17	
४	शुक्र	18	
५	शनि	19	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सवः।
६	रवि	20	
७	सोम	21	श्री गुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)।
८	मंगल	22	सातस्वरूप को उत्सव, श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत।
९	बुध	23	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई (लालघटा)।
१०	गुरु	24	
११	शुक्र	25	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	26	
१३	रवि	27	
१४	सोम	28	
१४	मंगल	29	
१५	बुध	30	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास की समाप्ति। इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३ **पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७७

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	31	नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव (२००५)।
२	शुक्र	1	जनवरी, सन् २०२१ का प्रारम्भः।
३	शनि	2	
४	रवि	3	
५	सोम	4	
७	मंगल	5	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव (१६२५)।
८	बुध	6	
९	गुरु	7	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव (१५७२)।
१०	शुक्र	8	
११	शनि	9	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६९)।
१२	रवि	10	
१३	सोम	11	
१४	मंगल	12	
३०	बुध	13	गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पुत्र चि.गो.१०५ **श्री भूपेशकुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन (२०३७)। भोगी, धनुर्मास की समाप्ति। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४३	**पौष शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	14	मकर संक्रान्तिः। तिलवा गोपीवल्लभ या राजभोग में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रान्ति १ गुरु कू प्रातः ८ बजके १६ मिनिट पर बैठे है तासूं पुण्यकाले आज प्रातः ८ बजके १६ मिनिट सूं लेके दिन के ४ बजके १६ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी संक्रान्ति के पास के दो घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
२	शुक्र	15	
३	शनि	16	
४	रवि	17	
५	सोम	18	
६	मंगल	19	नित्य लीलास्थ गो. श्री १०८ श्री दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव (१९५३)।
७	बुध	20	
८	गुरु	21	
९	शुक्र	22	
१०	शनि	23	
११	रवि	24	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	25	
१३	मंगल	26	
१४	बुध	27	
१५	गुरु	28	माघ स्नानारम्भः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	29	इष्टिः।
२	शनि	30	
३	रवि	31	
४	सोम	1	फरवरी
५	मंगल	2	
६	बुध	3	
७	गुरु	4	पीली घटा।
८	शुक्र	5	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (१७११)
९	शनि	6	
११	रवि	7	
१२	सोम	8	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिल की वस्तु अवश्य भोग धरनो। तिल के दान भक्षणादि करने।
१३	मंगल	9	
१४	बुध	10	
३०	गुरु	11	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**माघ शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	12	इष्टिः।
२	शनि	13	
३	रवि	14	
४	सोम	15	श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सवः।
५	मंगल	16	बसन्त पंचमी।
६	बुध	17	
६	गुरु	18	
७	शुक्र	19	
८	शनि	20	
९	रवि	21	
१०	सोम	22	
११	मंगल	23	जया एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	24	
१३	गुरु	25	
१४	शुक्र	26	
१५	शनि	27	माघ स्नान की समाप्ति। होरी डांडो दण्डारोपण, आज सूर्योदय सूं पूर्व याही समय धमार को आरम्भ, रोपणी को उत्सव। इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	**फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	28	
२	सोम	1	मार्च
४	मंगल	2	
५	बुध	3	
६	गुरु	4	
७	शुक्र	5	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
८	शनि	6	
९	रवि	7	
१०	सोम	8	
११	मंगल	9	विजया एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	10	
१३	गुरु	11	
१४	शुक्र	12	
३०	शनि	13	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३	फाल्गुन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०७७
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	14	इष्टिः।
२	सोम	15	
३	मंगल	16	
४	बुध	17	
५	गुरु	18	
६	शुक्र	19	
७	शनि	20	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। **श्री गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** को जन्मदिन (२००६)
७	रवि	21	
८	सोम	22	होलिकाष्टकारम्भः।
९	मंगल	23	
१०	बुध	24	
११	गुरु	25	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	26	
१४	शनि	27	
१५	रवि	28	दोलोत्सव (डोल) होली, होलिका प्रदीपनं सूर्यास्तान्तर सायं ६ बजके ४९ मिनिट पश्चात्।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४३ **चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७७

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	29	इष्टिः। धूलिवन्दन (धुरेण्डी)। द्वितीया पाट।
२	मंगल	30	
३	बुध	31	
४	गुरु	1	अप्रेल
५	शुक्र	2	
७	शनि	3	गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पौत्र गो.चि. श्री भूपेशकुमारजी (श्री विशाल बावा साहब) के पुत्र **गो.चि. लाल गोविन्दजी (श्री अधिराज बावा)** को जन्मदिन (२०७५)
८	रवि	4	
९	सोम	5	
१०	मंगल	6	
११	बुध	7	पापमोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	8	
१३	शुक्र	9	
१४	शनि	10	
३०	रवि	11	
३०	सोम	12	सोमवती अमावस योग प्रातः ८ बजके २ मिनिट तक। वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्। इष्टिः।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण

संवत् २०७७ शकः १९४२ आषाढ़ कृष्ण ३० रविवार दिनांक २१ जून सन् २०२० के दिन भारतवर्ष में खण्डग्रास सूर्यग्रहण होयगो। या दिन नाथद्वारा में दिनमान ३४ घटी ११ पल सूर्योदय स्टे.टा. ५ बजके ४७ मिनिट सूर्यास्त ७ बजके २७ मिनिट नाथद्वारा में नवीन गणित प्रमाणे स्पर्श प्रातः १० बजके ८ मिनिट पर मध्य ११ बजके ४८ मिनिट, मोक्ष दोपहर १ बजके ३७ मिनिट पे होयगो। पर्वकाल ३ घण्टा २९ मिनिट होयगो। १४ शनिवार की रात्रि १० बजके २ मिनिट सूं ही वेध लगे है। तासूं १४ शनिवार की रात्रि के १० बजके २ मिनिट पूर्व ही खायो जायेगो। रवि कूं प्रातः ५ बजके ४७ मिनिट सूं पूर्व ही जल पीयो जायेगो। बिना जनेऊ के बालक तथा छोटी कन्या रवि कूं प्रातः ५ बजके ४७ मिनिट के पूर्व ही प्रसाद ले सकेंगे। रविवार को श्री कूं या सुमार पे जगावने ताकि ९ बजे तक राजभोग के भोग सरजाये। राजभोग की सखड़ी गायन कूं जाय। दिन के अनोसर नहीं होय रीति प्रमाणे सूखो मेवा प्रभृति धरनो, बीड़ा हूं तबकड़ी में नवीन धरने। शैय्या मंदिर के झारी बंटा प्रभृति खासा करिके सूके करने। स्पर्श सूं ४ मिनिट पूर्व दूध घर को भोग उठाय झारी बंटा हूं पट्ट वस्त्र सूं उठावने दर्शन खोलिके जपादिक करने। दिनके ११ बजके ४८ मिनिट के पीछे श्री के आगे दान को संकल्प करनो। खिचड़ी को डबरा घृत दक्षिणा सहित प्रायः सर्वत्र दियो जाय है। प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रय द्वारा गोदान जहां जैसा हो तो होय तहां वैसो कियो जाय। मनुष्य भी यथाशक्ति दानादि अवश्य करें। मोक्ष भये पीछे चार पाँच मिनिट ठहरके स्नानादि करने शुरू हो नवीन जल सूं झारी भरनी। श्री कूं स्नान करवाय के ग्रहण पीछे को भोग तथा उत्थापन भोग भेले धरनो। शयन पर्यन्त की सेवा चालु राखनी अनन्तर अनोसर करने। यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन पूर्वक प्रसाद लेनो।

यह ग्रहण - मेष, सिंह, कन्या, मकर राशि वारेन कूं शुभ

वृष, तुला, धनु, कुम्भ राशि वारेन कूं मध्यम

मिथुन, कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वारेन कूं अशुभ

जिनको जन्म नक्षत्र मृगशीर्ष तथा आर्द्रा हो उनको अति नेष्ट।

जिनकूं ग्रहण अनिष्ट होय उनकूं एक कांस्य के पात्र में तातो पतरो घृत भरिके सुवर्ण को नाग तथा सूर्य बिम्ब धरिके वा ताते पतरे घृत में मुख देखिके दक्षिणा सहित दान करनो। ताको मन्त्र -

तमोमय महाभीम सोमसूर्य विमर्दन।
हेमतार प्रदानेन मम शान्ति प्रदो भव।।१।।

विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिका नन्दनाऽच्युता।
दानेनानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद् भयात्।।२।।

स्टे.टा.	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
घन्टा	१०	११	१	३
मिनिट	८	४८	३७	२९

गणितकर्ता - **त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री,** मो. ९४१४४ ७३०१६

श्रीनाथजी मन्दिर

श्राद्धपक्ष को निर्णय

(आश्विन गु. भाद्रपद कृष्ण पक्ष - दिनांक 2.09.2020 से 17.09.2020 तक)

तिथि	वार	दि.	श्राद्ध
भा.शु.१५ (पूर्णिमा)	बुध	2.09	प्रतिपदा (एकम्) को श्राद्ध
१	गुरु	3.09	--
२	शुक्र	4.09	द्वितीया (दूज) को श्राद्ध
३	शनि	5.09	तृतीया (तीज) को श्राद्ध
४	रवि	6.09	चतुर्थी (चौथ) को श्राद्ध
५	सोम	7.09	पंचमी (पाचम) को श्राद्ध एवं पिण्डरहित भरणी श्राद्ध
६	मंगल	8.09	षष्ठी (छठ) को श्राद्ध
७	बुध	9.09	सप्तमी (सातम) को श्राद्ध
८	गुरु	10.09	अष्टमी (आठम) को श्राद्ध
९	शुक्र	11.09	नवमी (नवम) को श्राद्ध व अविधवा नवमी
१०	शनि	12.09	दशमी (दशम) को श्राद्ध व व्यतीपात श्राद्ध
११	रवि	13.09	एकादशी (ग्यारस) को श्राद्ध
१२	सोम	14.09	द्वादशी (बारस) को श्राद्ध व सन्यासीन को श्राद्ध
१३	मंगल	15.09	त्रयोदशी (तेरस) को श्राद्ध व मघा श्राद्ध
१४	बुध	16.09	चतुर्दशी (चौदस) निमित्तक घायलन को श्राद्ध, जल शस्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध
३०	गुरु	17.09	अमावस तथा सर्वपितृ को श्राद्ध
शु.आ.शु.१	शनि	17.10	मातामह श्राद्ध

क्रमशः पृ.३१

विशेष : 1. जाकी मरण तिथि चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो प्रशस्त है।

2. दशमी शनि कूं व्यतीपात योग होय वे सूं यह दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है। कोई भी तिथि को श्राद्ध रहि गयो होय या रही जायवे को सम्भव होय तो ताको श्राद्ध या दिवस करनो।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ॐ विष्णुः 3 श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रर्वत्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे प्रमादीनाम्नि सप्त सप्ततिः अधिक द्विसहस्त्र संख्या के वैक्रमाब्दे शकानुसारेण शार्वरी नाम संवत्सरे शरदृतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र, योगे, करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, सिंह राशि स्थिते श्रीसूर्ये अमावस्या गुरुवारतः कन्या राशि श्रीसूर्ये धनु राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारण) एतेषां यथानाम् गोत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्रीविषये सभर्तृक सपत्न्याम् विधिना महालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैव सद्यः करिष्ये।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

अधिकमास के दान को संकल्प

अधिक मास में नित्य अथवा पूर्वोक्त दिनन में ३३ पूवा अथवा पक्वान्न ३३ कांस्य के पात्र के धरिके दक्षिणा सहित देने। बने तो घृत सुवर्ण तथा वस्त्र हूं संग देने ताको संकल्प आचमन प्राणायाम करके करनो।

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्याज्ञया प्रवर्त्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे सप्तसप्ततिः अधिकाद्विसहस्त्र संख्याके विक्रमाब्दे प्रमादीनामसंवत्सरे (नर्मदा) के दक्षिण तीर सूं लेके द्वाचत्वारिशत्युत्तर एकोनविंशतितमे शालिवाहन शाके शार्वरीनाम संवत्सरे ऐसो कहनो।

शरदऋतौ अधिक आश्विन पुरुषोत्तम मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरान्वितायाममुकनक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकराशि स्थिते श्रीचन्द्रे कन्या राशि स्थिते श्रीसूर्ये धनु राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्स्वेवं ग्रहगण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम वर्षत्रयोपार्जित कायिक, वाचिक, मानसिक सांसर्गिक समस्त पापक्षयार्थ पुराणोक्त शुभ फल प्रात्यर्थं श्रीगोपीजलवल्लभ प्रीत्यर्थमिमांस्त्रयस्त्रिंशद् पूपान् सहिरण्यान् सवस्त्रान् सदक्षिणान् यथानामगोत्राय यस्मै कस्मैचिद् ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये तेन पुण्येन भगवान् सर्वात्मा श्रीगोपीजनवल्लभः प्रीयताम् अपूप के ठिकाने पक्वान्न होय तो 'अपूपस्थानापन्न पक्वानानि' ऐसो कहनो और घृत हिरण्यवस्त्रन में सूं न होय। ताके नाम को उच्चारण न करनो।

विष्णुरूपी सहस्त्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः। अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु।।
नारायण जगद्बीज भास्करप्रतिरूपधृक्। दानेनाऽनेन पुत्रांश्च सम्पदं चाभिवर्द्धय।।
यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडो यस्य वाहनः। शंख करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।।
कलाकष्ठादिरूपेण निमेषघटिकादिना। यो वंचयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः।।
कुरुक्षेत्रसमो देशः कालः पर्व द्विजो हरिः। पृथ्वीसममिदं दानं गृहाण पुरुषोत्तम।।
मलानां च विशुद्धयर्थं पापप्रशमनाय च। पुत्रपौत्रभिवृद्धयर्थं तव दास्यामि भास्कर।।

वैष्णवों के कर्तव्य

वैष्णवों को चाहिये कि श्रीभागवत के तत्त्व को समझने वाले, उसी के अनुसार निष्काम भाव से सदा कृष्ण सेवा में परायण दम्भादिरहित गुरु के पास जाकर प्रथम शरण मंत्र की तथा ब्रह्मसम्बन्ध की दीक्षा ले और वे जिस प्रकार सेवा का क्रम बतावे उसी प्रकार सेवा करे। जहाँ सेवा का प्रवाह चलता हो वहाँ रहे भगवान् की मूर्ति को साक्षात् स्वरूपात्मक समझ उसके अवयव में भगवान् के ही अवयव समझता हुआ ऐसी भावना करे कि ये कड़े कुण्डल आदि भगवान् के ही अवयव में धरा रहा हूँ। सामर्थ्य हो तो प्रभु की सेवा वैसे ही करे जैसे एक राजाधिराज की कीजाती है, अथवा जैसे राजाधिराज प्रभु की सेवा बड़े ही समारोह से करता है, वैसे ही करे। मन्दिर की सोहनी मंदिर वस्त्र मांडना चन्दुआ पिछवाई सिंहासन शैय्या आदि की सेवा करे। ग्रीष्मऋतु में छिड़काव लगावे। स्वरूप में जैसे अत्यधिक सौन्दर्य की प्रतीति हो वैसे ही सप्रेम वस्त्र आभूषण धरावें। सेवा में स्त्री पुत्र आदि सहायक हो तो उन्हीं को रखकर सेवा करे। यदि वे सेवा में बाधा करते हों तो उनका परित्याग करे; क्योंकि भगवद्बहिर्मुख के साथ रहना वैष्णव के लिये बिल्कुल ही मना है। निर्वाह के लिये उपाय करना पड़े तो भी एक प्रहर तो सेवा में अवश्य ही लगावे पश्चात् निर्वाह का उपाय करे। सदा निष्काम भाव से भागवत का पाठ करे। मन का सम्बन्ध अविच्छिन्न रूप से भगवान् श्रीकृष्ण में रक्खे। सभी को कृष्ण का स्वरूप समझ कर सभी के कटुवाक्य सहन करे। काम, क्रोध, अहंकार आदि दोषों से मुक्त रहता हुआ वैराग्य और संतोष रक्खे। अहंता ममता की निवृत्ति के लिये तथा मानसी सेवा की सिद्धि के लिये प्रेम से तनुजा (शरीर से होने वाली) वित्तजा (धन से होने वाली) सेवा सदा करता रहे। वृथा क्रिया और वृथा बात न करे। जो भी कुछ अपनी अत्यन्त अभीष्ट वस्तु हो तथा जिससे अपने चित्त में अतीव आनन्द

होता हो उस वस्तु को भगवान् के अर्पण करे। आत्मनिवेदन की भावना करता हुआ स्त्री पुत्र आदि को भगवान् के ही समझ अहंता ममता का परित्याग करे। उत्तम से उत्तम फल एवं पुष्प आदि लाकर प्रभु के अर्पण करें। सेवा और नित्य कर्म एक ही समय में प्राप्त हो तो वर्णाश्रम धर्म को सेवा का अंग समझ कर प्रभु को श्रम न हो इसके लिए प्रभु की सेवा प्रथम करे और पश्चात् अपना नित्य कर्म करे, इन्द्रियों का दमन करता हुआ निषिद्ध कर्म में कभी प्रवृत्त न हो। प्रभु के जो असमर्पित वस्तु हो उसे कभी न ले। शरीर के स्वास्थ्य की तथा निद्रा भोजन की भी कामना इसीलिये करे कि मैं स्वस्थ रहूँगा तो विशेष रूप से प्रभु की सेवा कर सकूँगा। सेवा में कामजन्य उपद्रव न हो तथा सेवा में सहायता मिले इसलिये विवाह भी करे। प्रभु की नित्य सेवा तथा विशेष मनोरथ कराने के लिये व्यापार आदि में प्रवृत्त हो। प्रभु को साधन नियम्य नहीं समझता हुआ साधन बल से प्रभु की प्राप्ति अवश्य होगी, यह विचार न रख चपलता को छोड़ दीनता से प्रभु की सेवा करे। सेवा कथा कीर्तन आदि में निरन्तर लगा रहे। अपना सब कुछ देकर परोपकार करे और प्रभु को सर्वत्र समझ निष्काम भाव से सभी की सेवा करे लज्जा का बिलकुल परित्याग कर सभा में भी प्रेम से भगवन्नाम का उच्चारण करे, गोपीचन्दन के शंख चक्र आदि तथा तुलसीमाला एवं तिलक अवश्य धारण करे। दशमी के वेध से रहित एकादशी का तथा सप्तमी के वेध से रहित जन्माष्टमी आदि का व्रत अवश्य करे और सतत् भगवान् श्रीकृष्ण का ही आश्रय रक्खे।

लेखक -

त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री

विद्याविभागाध्यक्ष

विद्याविभाग मंदिर मण्डल, नाथद्वारा-३१३३०१

वर्त्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फा.शु.७	गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेश जी) महाराज,** श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) के लालजी १
मार्ग.कृ.३०	चि.गो.श्री भूपेशकुमारजी **(श्री विशाल बावा),** चि.गो. श्री विशाल बावा के लालजी १
फा.कृ.७	गो.चि. लाल गोविन्दजी **(श्री अधिराज बावा)**
आ.कृ.१३	गो. कल्याणराय जी गो. कल्याणराय जी के लालजी २
पौ.कृ.६	चि. श्रीहरिरायजी
अश्वि.शु.६	चि. श्रीवागधीशजी
माघ शु.१३	चि.हरिरायजी के लालजी २
फा.शु.३	चि.श्री वदान्य राय जी चि. द्विजराज जी
पौष शु.५	गो. श्री गोकुलोत्सव जी श्री गोकुलोत्सव जी के लालजी १
फा.शु.४	चि. श्री व्रजोत्सवजी चि. व्रजोत्सव जी के लालजी १
वै.शु.१२	चि. व्रजेश्वरजी
वै.कृ.४	गो. दिव्येशजी
	गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी २
चै.शु.१४	चि. श्री प्रिय व्रजराय जी
का.शु.१०	चि. श्री अनुश्रुत जी

कांकरोली

पौ.शु.१०	गो. श्रीवृजेशकुमारजी
चै.कृ.४	गो. पीताम्बरजी
वै.कृ.६	गो. त्रिलोकीभूषणजी
	श्री व्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु.५	चि.पुरूषोत्तमजी
का.व.४	चि. द्वारकेशजी
	श्री पीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये.शु.१४	चि. व्रजालंकारजी
	गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

वै.कृ.१३	गो. चि. व्रजाभरणजी
	श्री पुरूषोत्तमजी के लालजी २
का.कृ.६	गो. श्रीव्रजभूषणजी
का.शु.१०	गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी
	श्री द्वारकेश जी के लालजी २
मा.व.१२	चि. आश्रयकुमार जी
ज्ये.सु.८	चि. शरणकुमार जी
	चि. व्रजाभरण जी के लालजी १
भा.शु.२	चि.रणछोड़ राय जी
आ.सु.६	गो. रविकुमारजी गो. रविकुमारजी के लालजी २
श्रा.सु.३०	चि. अवतंस बावा
माघ व.४	चि. प्रियम बावा

कोटा-बम्बई जतीपुरा

वै.कृ.६	गो. लालमणीजी लालमणीजी के लालजी २
श्रा.शु.६	चि. गो. मिलनकुमारजी
चै.शु.६	चि. द्वारकेशलालजी
	श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२	चि. कृष्णास्थ बावा

कोटा-कड़ी

चै.शु.१०	गो. गोपाललालजी
	गोविन्दरायजी के लालजी
भा.कृ.६	चि. व्रजेशकुमारजी
माघ.व.१०	गो. चि. घनश्यामलालजी
आसो.सु.१०	गो. दामोदरलालजी
चै.व.१२	गो. चि. वल्लभलालजी गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आषा.सु.८	चि. पुरूषोत्तमजी
	घनश्यामलालजी के लालजी २
फा.शु.७	गो.चि. कृष्णकुमारजी गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १
पौ.व.११	गो.चि. व्रजपाललालजी

श्रीनाथजी प्रेस

फा.शु.११	चि. कुंजेशकुमारजी गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २
मार्ग.व.२	गो.चि. गोविन्दरायजी
आश्वि.व.३	गो.चि. गोकुलमणीजी
	गो. गोपाललाजी के लालजी २
आसो.व.३	चि. विनयकुमारजी
आषा.व.४	चि. शरदकुमारजी
श्रा.सु.७	गो. त्रिलोकीभूषणजी त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
ज्ये.कृ.१	राजीवलोचनजी
	व्रजेशकुमारजी के लालजी ३
चै.शु.६	चि यदुनाथजी चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. प्रद्युम्नजी
कार्ति.सु.१०	चि. द्वारकेशजी
कार्ति.सु.७	चि. जयदेवजी चि. जयदेवजी के लालजी १
मार्ग कृ.१३	चि. व्रजराजजी

	चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा.व.१२	चि. हरिरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
माघ कृ.१३	चि. गोकुलेश्वरजी
ज्ये.व.१०	चि. दर्शन कुमारजी
	चि. दर्शनकुमार जी के लालजी २
ज्ये.व.४	चि. व्रजाधीशजी
फा.कृ.७	चि. व्रजाधीपजी

कामवन

फा.सु.२	गो. श्री वल्लभलालजी गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २
भा.कृ.२	चि. श्री देवकीनंदनजी
श्रा.कृ.१०	चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ.कृ.१४	गो. श्री द्वारकेशलालजी गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २
फा.शु.३	चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा.कृ.१३	चि. श्री कन्हैयालालजी
	चि. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा.कृ.४	चि. श्री गोविन्दजी
का.शु.७	चि. श्री गोकुलचन्द्र जी
	चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का.शु.१०	चि. श्री जयदेवजी

कामवन/भावनगर

भा.शु.१	गो. श्री नवनीतलालजी
	गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का.शु.१	चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का.कृ.११	गो. मुरलीधर जी गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १
मार्ग.शु.४	चि. श्री जयदेवलालजी
चै.कृ.१३	गो. श्री रघुनाथलालजी गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २
मार्ग.शु.६	चि. श्री गिरधरजी
श्रा.कृ.५	चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

आष.सु.११	गो. ब्रजेशकुमारजी के लालजी १
	गो. ब्रजेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.व.३	गो. चि. अनिरूद्धजी चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा.कृ.६	चि. रमणजी (रसेश जी)
श्रा.व.३	गो. गोपाललालजी
आसो.व.१२	गो. कल्याणरायजी
चै.सु.१५	गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
	गो. रघुनाथजी के लालजी १
माघ सु.४	चि. योगेशकुमारजी चि. योगेशकुमारजी के लालजी २
आ.व.१३	चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रीनाथजी द्वार

श्रा.कृ.३०	चि. व्रजपालजी
भा.सु.१४	गो. शिशिरकुमारजी
	गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो.व.४	चि. लालजी
	गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी १
भा.व.१	गो. चि. उपेन्द्रजी

गोकुल

का.व.१०	गो. देवकीनन्दनजी गो. देवकीनन्दन के लालजी २
मा.व.३०	चि. वल्लभलालजी
का.सु.२	चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो.व.१४	गो. रघुनाथ जी
आसो.व.६	गो. ब्रजेशकुमारजी गो. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व.६	चि. रसिकप्रितमजी
श्रा.व.११	गो. कन्हैयालाल जी गो. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा.व.८	चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

माघ.व.५	गो. कल्याणरायजी
मार्ग.सु.११	गो. वल्लभलालजी
आषा.व.४	गो. गोपेश्वरजी
पौ.व.३	गो. मुकुन्दरायजी
	गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो.व.१	चि. अनुरागजी
	गो. गोपेश्वरजी के लालजी १
फा.व.६	चि. वत्सलराजजी
	चि. अनुरागरायजी के लालजी १
आसो.व.७	चि. पुरूषोत्तमरायजी
	गो. मुकुन्दराय जी के लालजी १
आसो.कृ.१२	चि. पीताम्बर रायजी

श्रीनाथजी मन्दिर

बड़ोदरा, सूरत

चै.सु.११	गो. मथुरेशजी
भा.व.४	गो. चन्द्रगोपालजी
पौ.व.५	गो. प्रभुजी
	गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु.६	चि. योगेशकुमारजी
भा.व.२	चि. द्रुमिलकुमारजी
	गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १
	चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

ज्ये.सु.५	गो. हरिरायजी
फा.व.१४	गो. व्रजरत्नजी
पौष सु.६	गो. नवनीतरायजी
आषा.सु.८	गो. बालकृष्णजी
आषा.सु.१५	गो. मुकुट बावा
फा.व.१२	गो. शरदकुमारजी
फा.सु.१५	गो. उत्सवजी
आश्वि.शु.६	गो. पुरुषोत्तमलालजी
का.शु.४	गो. गोपेशरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
का.व.१२	चि. व्रजवल्लभजी
	गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि.सु.७	चि. गोकुलोत्सवजी
	गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये.सु.१०	चि. अंजनरायजी
	बालकृष्णजी के लालजी १
पौ.सु.१	चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ.व.६	गो. प्राणवल्लभजी गो. प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का.शु.११	चि. व्रजवल्लभजी
चै.व.११	चि. जयवल्लभ जी
	चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै.कृ.११	चि. कृतार्थ बावा
भा.सु.५	गो. रसिकवल्लभजी

	गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मा.शु.५	चि. समर्पण बावा
आ.सु.६	चि. प्रागट्य कुमार जी
का.सु.६	गो. अक्षयकुमारजी
आषा.सु.१४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ व.६	चि. गोपाललालजी
	चि. गोपाललालजी के लालजी १
फा.कृ.१२	चि. अक्षतकुमारजी
का.सु.५	चि. व्रजभूषणलालजी
	चि. ब्रजभूषणलालजी के लालजी १
आश्वि.शु.४	चि. ऋषभकुमारजी
ज्ये.सु.११	गो. प्रबोधकुमारजी
	गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी २

भा.सु.८	चि. अभिषेककुमारजी
	चि. अभिषेककुमारजी के लालजी १
आषा.कृ.१३	चि. रक्षितकुमारजी
भा.सु.४	चि. रत्नेशकुमारजी
	चि. रत्नेशकुमारजी के लालजी १
वै.शु.२	चि. यदुनाथजी
मार्ग.व.२	गो. संदीपकुमारजी
पौ.सु.६	गो. संजयकुमार जी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३
आसो.सु.१	चि. प्रणयकुमारजी
	प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु.१२	गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु.७	गो.चि. वृजरायजी
पौ.व.६	चि. परितोषकुमारजी

श्रीनाथजी मंदिर

मार्ग.व.८	चि. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग.सु.२	श्याम मनोहरजी
	गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग.कृ.६	गो. चि. प्रियेन्दु बावा, गो. चि. प्रियेन्दु बावा के लालजी १
मार्ग.कृ.१३	चि. परिवृढ़ बावा

अहमदाबाद

का.सु.१२	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो.व.१०	चि. तिलक बावा
आश्वि.शु.१	गो.चि. आभरण बावा
	गो.चि. तिलक बावा के लालजी २
ज्ये.सु.२	गो. चि. निवेदन बावा

आ.व.१०	गो.चि. आभुषणजी बावा

मुम्बई

आ.सु.५	गो. मनमथरायजी
मार्ग.व.६	गो. नीरजकुमारजी
	गो. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै.व.१४	चि. गोविन्दरायजी
	गो. गोपीनाथजी के लालजी १
का.व.१३	चि. रमेशचन्द्रजी
माघ सु.६	चि. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ व.६	गो. रघुनाथजी
	गो. रघुनाथजी के लालजी २
भा.सु.५	चि. गोपीनाथजी दिक्षीत
मार्ग.सु.२	चि. नागरमोहनजी
माघ व.६	गो. यदुनाथजी

फा.सु.१५	गो. गोकुलनाथजी
	गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
पौ.व.४	गो. मधूसुदन जी
आषा.सु.२	गो. कृष्णकान्तजी
	चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा.शु.११	चि. गिरिधरलालजी
मार्ग.सु.४	गो. गोकुलनाथजी
आषा.सु.११	गो. ललितत्रिभंगीजी
	गो. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा.सु.८	चि. व्रजवल्लभलालजी
मार्ग.व.४	गो. हृषीकेशजी
	गो. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो.सु.१	गो. राजीवलोचनजी

वै.सु.७	रविरायजी
	गो. द्वारकाधीशजी के लालजी २
वै.व.४	चि. योगेशकुमारजी
	चि. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा.व.३०	चि. बालकृष्णलालजी
का.व.४	चि. कमलेशकुमारजी चि. कमलेशकुमारजी के लालजी १
फा.व.६	चि. मुकुन्दरायजी
आसो.सु.१	गो. मनमोहनजी मनमोहनजी के लालजी १
आ.व.१४	गो. चि. प्रियव्रतरायजी
आषा.व.३०	गो. हिरण्यगर्भजी गो. हिरण्यगर्भजी के लालजी १
आ.कृ.११	चि. हैयंगवीनजी
	गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

श्रीनाथजी मंदिर

चै.सु.१०	चि. कृष्णचन्द्रजी
पौ.व.५	चि. वल्लभदीक्षितजी
आसो.सु.११	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी २
मा.व.१०	चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा
फा.व.२	चि. गो. श्री तिलकराय बावा

कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये.सु.२	गो. द्वारकेशलालजी
कार्ति.सु.७	गो. पुरूषोत्तमजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १
आसो.व.२	गो. श्री विट्ठलराय जी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो.सु.३	गो. रसिकवल्लभजी
चै.सु.६	गो. महेन्द्रकुमारजी
	गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १
आसो.सु.१३	चि. शिशिरकुमारजी
	चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ सु.८	गो. माधवरायजी
मार्ग.सु.६	गो. चन्द्रगोपालजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
श्रा.कृ.६	चि. अनिरूद्धलालजी
आसो.व.१४	गो. शैलेशकुमारजी
	श्री शैलेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.सु.३	चि. लाडिलेशजी
	गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा.व.४	चि. मुरलीधरजी

श्रीनाथजी मंदिर

बोरीवली-जामखंभालिया

श्रा.व.१३	गो. राकेशकुमारजी
	गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का.व.१३	गो. त्रिभंगीलालजी
चै.व.११	गो. व्रजप्रियजी
माघ व.१०	गो. व्रजनाथलालजी
वै.सु.१३	गो. राजीवलोचनजी
मार्ग.सु.२	गो. गोविन्दरायजी
	गो. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा.सु.२	चि. रूचिरबाबा
ज्ये.सु.१५	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी १
फा.सु.२	चि. गो. द्वारकेशलालजी
	गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३
आषा.व.५	चि. देवकीनन्दनजी
	चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १
चै.व.११	चि. गो. वेदांग बावा
ज्ये.सु.४	चि. कुंजरायजी
श्रा.कृ.३	चि. गो. गिरिधरजी
	गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का.सु.३	चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा.व.३	गो. दानीरायजी
	गो. दानीरायजी के लालजी ४

श्रीनाथजी मंदिर

का.सु.५	चि. पुरूषोत्तमजी
आषा.सु.११	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	चि. व्रजेन्द्रकुमार जी के लालजी ३
भा.व.१	चि. ब्रजनाथजी
आश्वि.व.१३	चि. मधुरेशजी
चै.शु.६	चि. कृष्णराय जी
का.शु.१५	चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै.सु.४	गो. अजयकुमार जी
	गो. अजयकुमार जी के लालजी १
भा.कृ.६	चि. वागधीशकुमारजी
फा.व.११	गो. भरतकुमारजी
	गो. भरतकुमारजी के लालजी १
वै.व.२	चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै.सु.१४	गो. रणछोड़लालजी
	गो. रणछोड़लालजी के लालजी १
फा.कृ.१३	चि. गोकुलनाथजी
माघ व.६	गो. अनिरूद्धलालजी
	गो. अनिरूद्धजी के लालजी १
वै.सु.१४	चि. रसिकरायजी
	चि. रसिकरायजी के लालजी १
श्रा.कृ.७	चि. अचिन्त्य जी
आ.कृ.६	गो. चन्द्रगोपालजी
का.सु.४	गो. भूषणजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी २

श्रीनाथजी मन्दिर

का.सु.१२	चि. अन्वयजी
श्रा.सु.५	चि. प्रत्यय जी
	गो. भूषणजी के लालजी २
फा.कृ.३	चि. अव्ययजी
का.सु.८	चि. गोपालजी
वै.सु.६	गो. किशोर चन्द्रजी (जूनागढ)
	गो. किशोरचन्द्रजी के लालजी १
का.व.४	चि. व्रजेन्द्रजी
	चि. व्रजेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.२	चि. ब्रजवल्लभजी
पौ.कृ.७	चि. पुण्यश्लोकजी
पौ.सु.१२	गो. विट्ठलनाथजी (मुम्बई)
आश्वि.कृ.७	गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
	गो. श्री सारंगजी के लालजी १
फा.सु.१४	चि. उत्सव बावा

पोरबन्दर

वै.सु.७	गो. हरिरायजी हरिरायजी के लालजी १
मा.शु.११	चि. जयगोपालजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग.व.१०	गो. रसिकरायजी
पौ.कृ.८	श्री श्याम मनोहर जी
	गो.रसिकरायजी के लालजी २
वै.व.१०	चि. चन्द्रगोपालजी
माघ व.१२	गो. वसन्तकुमारजी
का.सु.६	गो. विशालकुमारजी
	गो. वसन्तकुमारजी के लालजी १
भा.व.१२	चि. श्रीकृष्णरायजी
फा.कृ.५	गो. अभिषेककुमारजी
	गो. अभिषेककुमारजी के लालजी १
चै.कृ.११	चि. द्वारकेशलालजी
वै.शु.३	गो. अक्षयकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी १
का.शु.६	चि.रमणेशजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा.सु.७	चि. मिलनकुमारजी
	चि. मिलनकुमारजी के लालजी ३
मार्ग.शु.८	चि. गोकुलनाथजी
आश्वि.कृ.६	चि. विट्ठलेशरायजी
आश्वि.शु.११	चि. मथुरेशजी

श्रीनाथजी मन्दिर

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की गुर्जरमासानुसार सूचना

"श्रावण"		
व.१	श्री गोवर्द्धनलालजी	नाथद्वारा
व.७	श्री रणछोड़लालजी	बम्बई
व.८	श्री कन्हैयालालजी	गोकुल
व.९	श्री कृष्णजीवनजी	चैन्नई
व.१२	श्री प्रद्युम्नलालजी	वेटद्वार
व.१४	श्री गोपाललालजी	कांकरोली
व.३०	श्री कन्हैयालालजी	बम्बई
सु.२	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
सु.११	श्री गिरधारीलालजी	मुम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	चापासेनी
सु.१२	श्री गोकुलेशजी	जूनागढ़

"भाद्रपद"		
सु.४	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.७	श्री व्रजरत्नलालजी	सूरत
सु.८	गो. व्रजजीवनजी	कान्दीवली मुम्बई
सु.९	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.१०	श्री दामोदरलालजी	बम्बई
सु.११	श्री व्रजवल्लभजी	जूनागढ
सु.१२	श्री गोकुलनाथजी	बम्बई
सु.१२	श्री अनिरूद्धलालजी	नडियाद
सु.१३	श्री पुरूषोत्तमलालजी	कोटा
व.१	श्री मदनमोहनजी	मुम्बई
व.३	श्री गोवर्द्धनलालजी	बम्बई
व.३	श्री दामोदरलालजी	मथुरा

श्रीनाथजी मन्दिर

व.७	श्री वल्लभलालजी	बड़ौदा
व.७	श्री घनश्यामलालजी	सूरत
व.८	श्री मुरलीधरजी	कोटा
व.८	श्री मुरलीधरजी	बेटद्वार
व.१०	श्री व्रजनाथजी	विलेपार्ले
व.११	श्री नृसिंहलाल जी	शेरगढ़
व.१२	श्री गोविन्दरायजी	कोटा

''आश्विन''

सु.७	श्री हरिरायजी	मुम्बई
सु.११	श्री कृष्णकुमारजी	कामवन
व.३	श्री घनश्यामलालजी	मुम्बई
व.५	श्री व्रजनाथजी	जामनगर
व.६	श्री मगनलालजी	सूरत
व.१०	श्री व्रजरायजी श्री नटवरगोपालजी	अहमदाबाद
व.१०	श्री कन्हैयालालजी	मथुरा, पोरबंदर
व.१३	श्री व्रजपाललालजी	मथुरा
व.१४	गो. जयदेवलाल जी	वीरगाम

''कार्त्तिक''

सु.१	श्री गोवर्द्धनेशजी	बम्बई
सु.१	श्री रमणलालजी	मथुरा
सु.३	श्री प्रदीपकुमारजी	मथुरा
सु.४	श्री मधुसूदनलालजी	अमरेली
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	अमरेली
सु.७	श्री लालमणिजी	कोटा
सु.७	श्री जीवनेशजी	मुम्बई
सु.८	श्री गोपाललालजी	मथुरा
सु.१०	श्री गोकुलाधीशजी	बम्बई
सु.११	श्री श्यामसुन्दरजी	बम्बई
सु.१३	श्री गोविन्दरायजी	कामवन

श्रीनाथजी मन्दिर

सु.१४	श्री जीवनलालजी	कोटा
सु.१५	श्री गिरधरलालजी	काशी
व.२	श्री पुरूषोत्तमलालजी	जूना
व.७	श्री गोविन्दलालजी	नाथद्वारा
व.८	श्री राजेन्द्रकुमारजी	मथुरा
व.१०	श्री उत्तमश्लोकजी	मुम्बई
व.१४	श्री जयदेवजी	वीरमगाम

''मार्गशीर्ष''

सु.१३	श्री गिरधरलालजी	नाथद्वारा
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	मांडवी
व.१	श्री दाऊजी (राजीवजी)	नाथद्वारा
व.३	श्री विट्ठलनाथजी	चापासेनी
व.३०	श्री गोविन्दरायजी	पोरबंदर

'पौष''

सु.४	श्री गोकुलनाथजी	वेरावल
सु.५	श्री गोपेश्वरलालजी	नाथद्वारा
सु.६	श्री दामोदरलालजी	नाथद्वारा
सु.७	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
सु.१०	श्री कल्याणरायजी	बम्बई
सु.१३	श्री वल्लभलालजी	बोरी., जाम.
व.६	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
व.६	श्री विट्ठलनाथजी	मथुरा
व.११	श्री रणछोड़लालाजी	राजकोट
व.१२	श्री व्रजभूषणलालजी	नड़ियाद

''माघ''

सु.४	श्री कृष्णकुमारजी	मथुरा
सु.६	श्री अनिरूद्धलालजी	मुम्बई
सु.१३	श्री घनश्यामजी	कामवन
व.२	श्री व्रजभूषणलालजी	कांकरोली
व.२	श्री नटवरलालजी	मांडवी
व.४	श्री नृत्यगोपालजी	मुम्बई

श्रीनाथजी मन्दिर

''फाल्गुन''		
सु.३	श्री गिरधरजी	सूरत
सु.४	श्री गोकुलनाथजी	गोकुल
सु.८	श्री रमणजी	कामवन
सु.११	श्री गोविन्दरायजी	सूरत
सु.१२	श्री काकागिरधरजी	नाथद्वारा
सु.१३	श्री मुरलीमनोहरजी	मुम्बई
सु.१४	श्री मधुसुदनलालजी	सूरत
सु.१५	श्री माधवरायजी	पोरबंदर
व.५	श्री चिम्मनलाल जी	बम्बई
व.१३	श्री व्रजरायजी	अहमदाबाद
व.३०	श्री कृष्णचन्द्रजी	मुम्बई

''चैत्र''		
सु.१३	श्री मुरलीधरजी	काशी
सु.१४	श्री पुरुषोतमजी	मुम्बई
सु.१५	श्री मुरलीधरलालजी	बोरीवली
व.१४	गो.यशोदानन्दनजी	बोरीवली

''वैशाख''		
सु.३	श्री देवकीनन्दनजी	कामवन
सु.६	श्री यदुनाथजी	मथुरा
सु.१०	श्री मुरलीमनोहरजी	बडोदरा
सु.११	श्री यदुनाथरायजी	जतीपुरा
सु.१५	श्री माधवरायजी	मुम्बई
व.१	श्रीद्वारकेशजी	पोरबन्दर
व.५	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
व.७	श्री शरदकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
व.११	श्री देवकीनन्दनजी	इन्दौर
व.१२	श्री दीक्षितजी	बम्बई
व.१४	श्री व्रजाधीशजी	मुम्बई
व.१४	श्री विट्ठलेशरायजी	पोरबंदर
व.३०	श्री वागीशरणजी	बम्बई

श्रीनाथजी मन्दिर

''ज्येष्ठ''		
सु.१	गो. मथुरेशजी	वीरगाम
सु.४	श्री त्रिविक्रमरायजी	कोटा
सु.५	श्री जीवनजी	बम्बई
सु.८	श्री मुकुन्दरायजी	राजकोट
सु.९	श्री गिरधरजी	कोटा
सु.११	श्री कल्याणरायजी	मथुरा
सु.१२	श्री द्वारकेशलालजी	कोटा
सु.१३	श्री जीवनलालजी	पोरबंदर
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	बम्बई
सु.१५	श्री जीवनलालजी	काशी
व.४	श्री गिरधरलालजी	कामवन
व.८	श्री घनश्यामलालजी	मांडवी
व.१२	श्री ब्रजरमणलालजी	मथुरा
व.१४	श्री वागधीशजी	अमरेली
''आषाढ़''		
सु.२	श्री मगनलालजी	वेरावल
सु.२	श्री गोपाललालजी	कामवन
सु.३	श्री गोपालालजी	कांकरोली
सु.३	श्री मथुरेशजी	मुम्बई
सु.३	श्री वल्लभलालजी	कामवन
सु.३	श्री दामोदरलालजी	चापां
सु.५	श्री दामोदरलालजी	राजकोट
सु.५	श्री विट्ठलेशरायजी	कां.मुम्बई
सु.८	श्री चिमनलालजी	मांडवी, गो.
सु.१२	श्री मथुरेशकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
सु.१३	श्री रघुनाथजी	जूनागढ़
सु.१४	गो. देवेन्द्रकुमारजी	नाथद्वारा
व.१	श्री गोकुलेशरायजी	जूनागढ़
व.३	श्री नटवरगोपालजी	(मु.–वेरावल – पोरबन्दर)
व.८	रसिकरायजी	चापासेनी नडियाद
व.८	श्री यदुनाथजी	सूरत
व.८	श्री घनश्यामलालजी	कामवन
व.१०	श्री व्रजरत्नलालजी	नडियाद
व.११	श्री विट्ठलेशरायजी	इन्दौर
व.११	श्री बालकृष्णलालजी	सूरत
व.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	बम्बई
व.१३	श्री बालकृष्णजी	कांकरोली
व.१३	श्री कृष्णरायजी	इन्दौर
व.१३	श्री गोकुलेशजी	बम्बई

।। श्री गोवर्धनधरः नवनीतप्रियौ विजयेते ।।

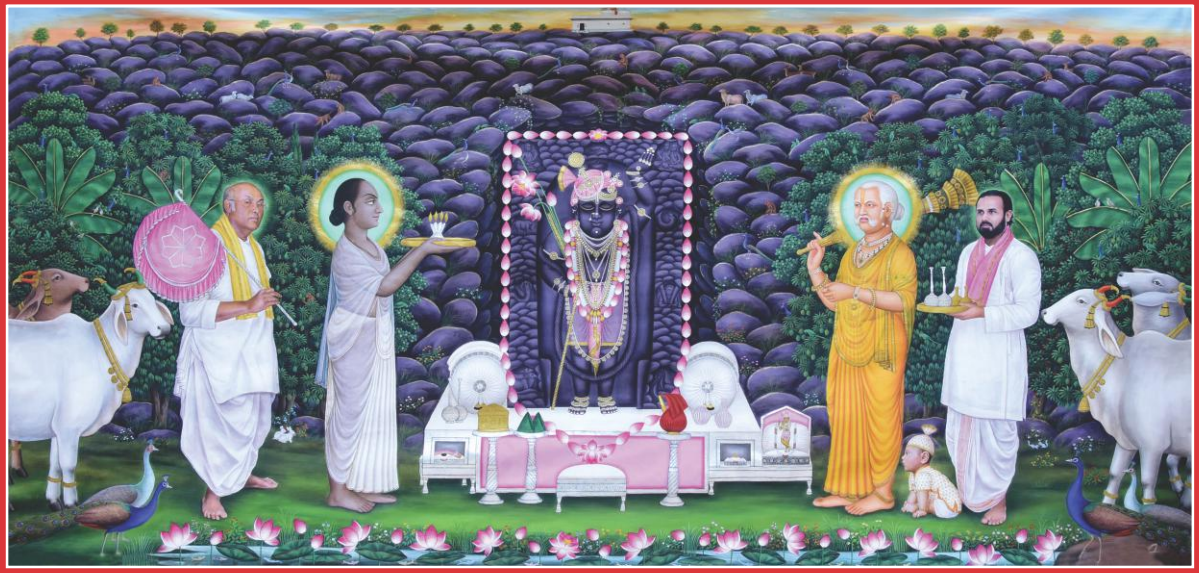

संवत् २०७५ तिलकायित वंशावली में पुनः एक नए सूर्योदय को वर्ष भयो । जामें श्री प्रभुचरण श्री गुसांईजी ने श्री गिरिधरजी के बहूजी श्री भामिनी बहूजी को जो आशीष दियो के "आपको वंश सदैव विद्यमान रहेगों" सो पुनः फलीभूत भयो और श्रीजी - श्री लाड़िलेलाल की कृपा सूं गो. ति. श्री १०८ श्री इंद्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराजश्री के पुत्र चि. गो. श्री १०५ श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशाल बावा साहब) के यहा श्री प्रभु सेवार्थ चि. लालन श्री लाल गोविन्दजी (श्री अधिराजजी बावा) को प्राकट्य भयो और तिलकायित वंशावली में एक और अलौकिक कुलदीपक प्रकट्यो जो या भूतल को चिरकाल तक प्रकाशित करतो रहेगो । समस्त पुष्टि सृष्टि को परम मंगल बधाई ।

"नंद घर आनंद भयो"

गणितकर्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री - 9414473016

श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत / तीज तेरस एक, पंचमी पूनो एक

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मृ.	महिना तिथिन के फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभारत होय, अशुभ, जीवनाश होय
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थपूर्ण होय, कामनापूर्ण होय
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीव नाश होय, कुशल सूं घर नहीं आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाचिन्ता होय, वियोग कदाचित् घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्न सहित भलीभांति सूं घर आवे
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, बहुत बुरो होय, जीवनाश होय
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन बहुत लगे, कुशल सूं घर आवे
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन को लाभ होय

टिप्पणी व पुस्तकें मिलने का स्थान :- श्री गोवर्धन पुस्तकालय, मोतीमहल चौक, श्रीनाथ जी का मन्दिर, नाथद्वारा -**313301** (राजस्थान)